खण्ड ५ (नया नियम)

विश्वास

लेखिका : **रूथ बी० ग्रेइनर**

चित्रकार : **फ्रान्सिस एच० हर्ड्जलर**

पाठ १

एक प्रतिष्ठित पुरुष के पुत्र को चंगा करना

धर्मशास्त्र पाठ :

यूहन्ना ४:४६-५४

पाठ का उद्देश्य : आपके विद्यार्थियों को यह सिखाना कि विश्वास : (१) प्रभु यीशु मसीह पर निष्ठा रखना और उसके वचन पर भरोसा रखना है (२) यह बिना देखे विश्वास रखना है, और (३) इसमें आज्ञाकारिता निहित है।

आपके विद्यार्थियों को यह जानना चाहिए : परमेश्वर और उसका प्रिय पुत्र पूर्णतया भरोसा रखने योग्य हैं।

आपके विद्यार्थियों को यह अनुभव करना चाहिए : प्रभु यीशु पर पूरा विश्वास रखने की उनमें हार्दिक इच्छा होनी चाहिए।

आपके विद्यार्थियों को यह करना चाहिए : उनको प्रभु यीशु मसीह पर, परमेश्वर के पुत्र के रूप में पूर्ण विश्वास होना चाहिए और उसको मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

पाठ की रूपरेखा : (शिक्षक और छात्रों की पुस्तिकाओं के लिए)

१. वह प्रतिष्ठित पुरुष यीशु से सहायता मांगने का निश्चय करता है
२. वह प्रतिष्ठित पुरुष यीशु के पास जाता है
३. जो कुछ यीशु कहता है, वह प्रतिष्ठित पुरुष उस पर विश्वास कर लेता है
४. उसके सेवक उसे सूचित करते हैं : कि उसका पुत्र चंगा हो गया है
५. वह पुरुष देखता है कि उसका पुत्र चंगा हो गया है

कण्ठाग्र पद : "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों २:८-९)

शिक्षक के लिए टिप्पणी :

इससे पहले कि आप सिद्धान्त सम्बन्धी सत्य की शिक्षा दें, यह आपके लिए परमावश्यक है कि आप स्पष्ट रूप में उस सिद्धान्त को स्वयं समझ लें। इसलिए इन पाठों को पढ़ाने से पहले, विश्वास के विषय पर कृपया बाइबल का अध्ययन कर लीजिए। हम सब प्रतिदिन साधारण विश्वास का प्रयोग करते हैं : हम लकड़ी के बने पुल द्वारा पार जाने लगते हैं क्योंकि हमें विश्वास होता है कि पुल नहीं टूटेगा। हम पानी का गिलास स्वीकार करते हुए पानी पी जाते हैं क्योंकि हमें विश्वास होता है कि यह पानी है। सभी विश्वास—यहां तक कि साधारण कोटि के विश्वास भी, जिनका हम सब प्रतिदिन प्रयोग करते हैं—परमेश्वर की ओर से होते हैं। उसने हमारी रचना ही इस प्रकार की है कि हम में विश्वास स्वाभाविक रूप में विद्यमान रहता है। जब किसी के अन्दर अपने उद्धार के प्रति प्रभु यीशु पर विश्वास होता है तो ऐसा होने के निम्न कारण होते हैं :

(१) क्योंकि यह परमेश्वर के त्रैक्यत्व का कार्य होता है, और
(२) क्योंकि उस व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व कार्य कर रहा होता है।

यदि आप निम्न रूपरेखा अपनी शिक्षक की पुस्तिका में लिख लें तो इससे आपको बहुत सहायता मिलेगी :

विश्वास

विश्वास के लिए एक दूसरा शब्द है, भरोसा। नए नियम में इन दोनों शब्दों का १५० बार प्रयोग किया गया है। सदा ही इनका अर्थ वही निकलता है : एक पापी को विश्वास करने या भरोसा रखने के कारण भी उद्धार प्राप्त घोषित किया गया है।

केवल परमेश्वर आत्मा का उद्धार करता है।

परमेश्वर केवल पुत्र के बलिदान द्वारा ही उद्धार करता है।

एक व्यक्ति केवल परमेश्वर के सन्देश पर विश्वास करके उद्धार प्राप्त कर सकता है।

विश्वास तथा कर्म में विरोधाभास है।

यूहन्ना रचित सुसमाचार के इन पदों का अध्ययन कीजिए : १:१२; ३:१६, ३६; ५:२४; ६:२९; २०:३१ और प्रेरितों के काम १६:३१; रोमियों १:१६; ३:२२; ४:५,२४; ५:१; १०:४; और गलतियों ३:२२।

१. सच्चे विश्वास को क्रियान्वित करने में, समस्त व्यक्तित्व निहित होता है।

(अ) **ज्ञान** : आवश्यक है (देखिए रोमियों १०:१३-१७)

१. हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि क्या और किस पर विश्वास करें।

२. विश्वास उत्तम साक्षी पर टिका होता है : परमेश्वर के वचन पर। अकेला **ज्ञान** पर्याप्त नहीं है। इसलिए :

(आ) **सहमति** आवश्यक है (देखिए मत्ती ९:२८)

हमारे लिए अपने ज्ञान से सहमत होना आवश्यक है।

कुछ सच्चाइयों के प्रति ज्ञान होना और मानसिक आधार पर उनसे सहमत हो जाना पर्याप्त नहीं है। इसलिए :

(इ) **उपयोजन** आवश्यक है (देखिए यूहन्ना १:१२)

जिन बातों का मुझे ज्ञान है, और जिन पर मुझे स्वयं विश्वास है उन पर मेरा अधिकार आवश्यक है।

२. धर्मशास्त्र पर आधारित सच्चा विश्वास निम्न बातों से सम्बन्धित है :

(अ) **परमेश्वर** (देखिए इब्रानियों ११:६, प्रेरितों के काम २७:२२-२५; रोमियों ४:१९-२१; उत्पत्ति १५:४-६)

१. हमें परमेश्वर के अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए।
२. विश्वास परमेश्वर द्वारा कही गई सभी बातों को सत्य मान कर उन पर भरोसा रखता है।

(आ) **प्रभु यीशु मसीह**

१. उसके दावे का **ज्ञान** होना चाहिए (देखिए यूहन्ना ९:३५-३८; यूहन्ना १०:३०; फिलिप्पियों २:६-११)
२. उसके दावों के प्रति **सहमति** होनी चाहिए (देखिए यूहन्ना १६:३०; २०:२८; मत्ती १६:१६; यूहन्ना ६:६-६९)

इसका ज्ञान हो जाने के पश्चात कि यीशु उद्धार कर सकता है और वह संसार का उद्धाकर्त्ता है, हमें अपने ज्ञान से सहमत हो जाना चाहिए।

३. मसीह का व्यक्तिगत **उपयोजन** होना चाहिए।

हम केवल मसीह के विषय में विश्वास नहीं करते, हमें स्वयं को मसीह की ओर मोड़ देना चाहिए। (यह एक व्यक्ति के सन्मुख समर्पण है, मात्र धार्मिक मत पर विश्वास नहीं है)

(इ) **प्रार्थना** (देखिए १ यूहन्ना ५: १४-१५)

१. जिन प्रतिज्ञाओं को हम अपनी प्रार्थनाओं का आहार बनाते हैं। उनका हमें समुचित **ज्ञान** होना चाहिए।
२. हमें विश्वास होना चाहिए (मानसिक रूप में सहमत) कि वे प्रतिज्ञाएं हमारे लिए हैं। (देखिए रोमियों ४:२०)
३. हमें उन प्रतिज्ञाओं को हस्तगत करना चाहिए। (देखिए याकूब १:५-७) वास्तविक विश्वास उन वस्तुओं के लिए प्राप्ति से पहले ही परमेश्वर को धन्यवाद देता है जो प्रार्थना में मांगी जाती हैं (यदि वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हैं)

३. विश्वास का स्रोत

विश्वास कहां से आता है ?

(अ) इस का स्रोत परमेश्वर है।

१. परमेश्वर पिता। (देखिए रोमियों १२:३)
२. परमेश्वर पुत्र (देखिए इब्रानियों १२:२)
३. परमेश्वर पवित्र आत्मा (देखिए गलतियों ५:२२)

(आ) विश्वास का एक मानवी पहलू है। (देखिए रोमियों १०:१७)

विश्वास परमेश्वर के वचन, और वचन के परमेश्वर, के ज्ञान से उत्पन्न होता है।

हमारा विश्वास उस विश्वास का प्रयोग करने से बढ़ता है जो हमारे अन्दर पहले से ही विद्यमान होता है। (देखिए लूका १७:५-६)

४. विश्वास के परिणाम

(अ) विश्वास से हमारा उद्धार होता है (देखिए यूहन्ना १:१२; रोमियों ५:१; गलतियों ३:२६; प्रेरितों के काम २६:१८; १ पतरस १:५)

(आ) हमें विश्राम, शान्ति, निश्चय, तथा आनन्द प्राप्त होता है। (देखिए यशायाह २६:३; रोमियों ५:१; यूहन्ना १४:१; १ पतरस १:८)

पाठ :

हमारा कण्ठाग्र पद हमें बताता है कि "विश्वास के द्वारा ही हमारा उद्धार होता है"—विश्वास जो कि, "परमेश्वर का दान है।" आइए एक क्षण के लिए शब्द 'विश्वास' पर विचार करें। इसका वास्तविक अर्थ क्या है ? (शिक्षक इस पर तर्क-वितर्क करें) मान लीजिए कि आप विश्वास को किसी अन्य व्यक्ति पर स्पष्ट करना